B.A. History Hons, Part-II

Paper: III, Unit: II, Date: 6.8.2020 Lecture No.-7

Lession: मुहम्मद बिन तुगलक का आक्रमण

मध्य-युग के इतिहास में मुहम्मद तुगलक चरित्र एवं उसके कार्य अन्य शासकों की तुलना में विवादस्पद रहे हैं। सभी इतिहासकार व्यक्तिगत दृष्टि से मुहम्मद तुगलक असाधारण था। उसका शरीर पुष्ट और शक्तिशाली था। उसने उचित शिक्षा प्राप्त की थी और उसका ज्ञान काफी विकसित था। उसे अरबी और फारसी भाषा, गणित, नक्षत्र-विज्ञान, भौतिक-शास्त्र, तर्क-शास्त्र, दर्शन, चिकित्सा आदि का ज्ञान था। वह एक अच्छा कवि था तथा उपमाओं एवं अलंकारों का प्रयोग करता था। वह लिखने और बोलने की कला में परिपूर्ण था। वह ललित कलाओं और संगीत से प्रेम था। वह स्वयं-विद्वान और सुसभ्य व्यक्ति था। वह निर्धनों की सहायता करता था और प्रत्येक चालीस हजार व्यक्ति शाही भोजनालय में भोजन प्राप्त करते थे। उसने अस्पताल बनवाये थे और राज्य की तरफ से दान दक्षिणा का पूर्ण प्रबंध था। वह शराब नहीं पीता था और शराब पीने को रोकने के लिए प्रयत्न किये थे। वह स्त्री-सम्बन्धों में वह बहुत कट्टर था और अनेक अवसरों पर सेना के साथ स्त्रियों को ले जाने पर प्रतिबंध लगाया था। उसने अपने पिता का हत्या करवा दिया था परन्तु अपने सिक्कों पर अपने पिता का नाम अंकित किया और अपनी माँ का सम्मान किया। वह एक सैनिक और सेनापति की दृष्टि से योग्य था।

दक्षिण भारत की विजय को पूर्ण करने का श्रेय उसी को था। अनेक विद्रोह हुए परन्तु जहाँ-जहाँ सुल्तान गया, उसने विद्रोह को दबाने में सफलता मिली। यह विश्वास किया जा सकता है कि आर्थिक संकटों, उत्तरी भारत के अकाल और दक्षिण भारत के हैजा अथवा प्लेग के कारण उसकी सेना दुर्बल हो गई थी। उसके सैनिक अभियानों की सफलता यह भी सिद्ध करती है कि उसे वफादार और योग्य व्यक्तियों की सेवाएँ प्राप्त हुई थी। दिल्ली के सुल्तान में किसी ने भी मुहम्मद तुगलक के बराबर अपने जीवन का सैनिक-अभियानों में व्यतीत नहीं किया। अपने 26 वर्ष के शासन-काल में वह जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हुआ। राज्य के आर्थिक हानि की, जनसाधारण को कष्ट और असंतोष प्रदान किया तथा सुल्तान की प्रतिष्ठा में कमी की।

बाह्य दृष्टि से उसकी खुरासान को विजय योजना त्याग दी गयी, कराजल-आक्रमण से लाभ कम और सैनिक हानि अधिक हुई, बंगाल स्वतंत्र हो गया, सम्पूर्ण दक्षिणी भारत में स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गये और गुजरात तथा सिन्ध में उसका प्रभाव अस्थिर हो गया। उसने अपने पिता से प्राप्त एक शक्तिशाली राज्य को दुर्बल और छोटा कर दिया यह माना जा सकता है कि तुगलक-वंश का पतन उसके समय से ही आरंभ हो गया। मुहम्मद तुगलक परिश्रमी, जनता की भलाई चाहने वाला और समय-समय पर अत्यधिक न्यायप्रिय होते हुए भी शासक की दृष्टि से असफल हुआ। उपर्युक्त बातों पर सहमत होने के कारण मुहम्मद तुगलक का दोमुखी व्यक्ति, चरित्र, व्यवहार और कार्य में विवाद का कारण बन गये। उसके असफल सुल्तान का उत्तरदायित्व, दुराग्रह, व्यवहारिक बुद्धि की कमी, धैर्य की कमी तथा मानव व्यवहार तथा परिस्थितियों को समझने का क्षमता का अभाव असफलता का मुख्य कारण थे। फलस्वरूप, सुल्तान संयम खोकर कठोर दण्ड देता था और परिस्थितियों के वशीभूत होकर वह उन्हें त्याग भी देता था। सुल्तान की यह कमी भी थी कि वह अपनी और अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त करने में असफल हो जाता था और कुछ क्रुद्ध होकर सभी को नीच और बेईमान मान लेता था। अतः अपनी असफलता का मूल कारण तो वह स्वयं ही था।

इतिहासकार इसामी और बरनी ने सुल्तान पर 'काफिर' होने का आरोप लगाया है परन्तु यह गलत है। सुल्तान दिल्ली के सुल्तानों में अत्यधिक सहिष्णु शासक था। वह सभी धर्मों के विद्वानों का सम्मान करता था। वह सभी सूफी, शेख, और अन्य विभिन्न सम्प्रदायों के संत के सम्पर्क में आया था। अपनी हिन्दु प्रजा के प्रति उसका व्यवहार सहिष्णुतापूर्ण था। नगरकोट पर आक्रमण के अवसर पर उसने ज्वालामुखी देवी के मंदिर को नष्ट नहीं किया। हिन्दुओं को सम्मानित पदों पर नियुक्त किया था। उसने उलेमा-वर्ग को अधिकारों से वंचित किया था और उनके अवसरों पर उसने उन्हें कठोर दण्ड दिये थे। अतः कट्टर मुसलमान और उलेमा वर्ग उसे असन्तुष्ट हो गये और गलत आरोप लगाये। सुल्तान को सन्तुष्ट करने के लिए खलीफा की स्वीकृति लेने और खलीफा के प्रतिनिधि शिहाबुद्दीन मुहम्मद की सम्मान करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस्लाम के विरुद्ध कार्य करने वालों को मृत्यु-दंड देता था। वह एक सहिष्णु मुसलमान शासक था। इब्न-बतूता ने लिखा है कि "मुहम्मद तुगलक एक ऐसा व्यक्ति है जो उपहार देने तथा रक्त बहाने में अन्य सभी से अधिक रूची रखता है। उसके द्वारा किसी निर्धन को धनवान बनाते हुए अथवा जीवित व्यक्ति को मृत्यु के मुख में जाते हुए किसी भी समय देखा जा सकता है।" इतिहासकार बरनी ने लिखा है कि "सुल्तान के निरपराध मुसलमानों का रक्त इतनी क्रूरता से बहाया कि सर्वदा उसके महल के दरवाजे से बहता हुआ खून की दरिया देखा जाता था।"

मुहम्मद तुगलक के एक अन्य विवाद यह है कि 'उसके विरोधी तत्वों का मिश्रण था भू नहीं?' लिंच ने लिखा है कि "वह विरोधी तत्वों का मिश्रण था जो बाद के समय में जहाँगीर में हुआ।" मुहम्मद तुगलक के कार्यों को देखते हुए जब उसके चरित्र की व्याख्या की जाती है तो यह स्पष्ट होता है कि निःसंदेह उसके चरित्र में विरोधी तत्व थे। "मुहम्मद तुगलक में विरोधी तत्वों का मिश्रण था।" अपने ही दुष्ट विवाह आदि हृदय और मस्तिष्क के अनेक गुण उसमें ऐसे थे जो उसके चरित्र के कुछ दोषों के पूर्ण विरोधी में दिखाई देते हैं। मध्य-युग में एक गुरुतर धारण करने वालों में मुहम्मद तुगलक, निस्सन्देह योग्यतम व्यक्ति था। मस्लिम शासन की स्थापना के पश्चात दिल्ली के सिंहासन को सुशोभित करने वाले शासकों में वह सर्वाधिक विद्वान और सुसंस्कृत शासक था। शिक्षा, ज्ञान, नैतिक चरित्र, व्यक्तिगत साहस और सैन्य संचालन की दृष्टि से मुहम्मद तुगलक अद्वितीय था। परन्तु एक शासक की दृष्टि से मुहम्मद तुगलक पूर्णतया असफल रहा, इसमें संदेह नहीं किया जा सकता। वह न तो अपने राज्य की सुरक्षा कर सका, न अपने प्रजा की भलाई और न ही अपनी प्रतिष्ठा की सुरक्षा। यही कारण है कि मुहम्मद तुगलक का स्थान एक योग्य और सफल शासक के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता। उसकी विद्वता का सम्पादित शक्ति, व्यक्तिगत साहस और धार्मिक सहिष्णुता उसकी श्रेष्ठता में थी। इन कारण मुहम्मद तुगलक की श्रेष्ठता उसकी सफलता अथवा असफलताओं के कारण नहीं बल्कि उसकी विद्वता और चरित्र के कुछ विशेष सद्गुणों के कारण है।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जमनगर

B.A. History Hon's Part-I
Paper: II, Unit-IV, Date: 06.08.2020 Lecture No: 8
Lession: यूरोप में वाणिज्यवाद

वाणिज्यवाद 16वीं से 18वीं शदी में यूरोप में प्रचलित एक आर्थिक सिद्धांत तथा व्यवहार के अन्तर्गत राज्य की शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से राष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं का सरकारों द्वारा नियंत्रण को प्रोत्साहन मिला।

व्यापारिक क्रांति ने एक नवीन आर्थिक विचारधारा को जन्म दिया इसका प्रारम्भ सोलहवीं सदी में हुआ। उस नवीन आर्थिक विचारधारा को वाणिज्यवाद, वणिकवाद या व्यापारवाद कहा गया है। फ्रांस में इस विचारधारा को कोल्बर्टवाद और जर्मनी में केमरलिज्म कहा गया। 1776 ई. में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने भी अपने ग्रन्थ 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में इसका विमोचन किया है।

परिचय: वाणिज्यवाद से अभिप्राय उस आर्थिक विचारधारा से है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में विशेषकर फ्रांस, इंग्लैण्ड और जर्मनी में सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में प्रसारित हुई थी और अठारहवीं सदी के मध्य तक इसका खूब विकास हुआ। वाणिज्यवाद की धारणा अन्तराष्ट्रीय व्यापार और उससे प्राप्त धन से संबंधित है। इस वाणिज्यवाद के सिद्धांत के अनुसार छवि और उसके उत्पादन की कुछ सीमा तक ही वृद्धि कर सकते हैं। औद्योगिकरण से और व्यापार की नियमित वृद्धि से देश सोना-चाँदी प्राप्त कर समृद्ध और शक्तिशाली होगा। "अधिक स्वर्ण प्राप्त कर अधिक शक्तिशाली बनो" यह वाणिज्यवाद का नारा था।

वाणिज्यवाद के प्रमुख लक्षण:

सोने और चाँदी का संचय: व्यापार-वाणिज्य से धन की वृद्धि होगी और यह धन सोने चाँदी हीरे जवाहरात, बहुमूल्य रत्न के रूप में प्राप्त कर उनका संग्रह करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यवाद का आधार है देश में औद्योगिकरण कर देश के बढ़ते हुए उत्पादन की वस्तुओं का अन्य देशों को निर्यात करना। अनुकूल एवं संतुलित व्यापार में प्रभूत धन प्राप्त करने के लिए विदेशों को अत्यधिक मात्रा में व्यापार माल बेचे पर विदेशों से अपने देश में न्यूनतम मात्रा में माल मंगाये। इसका अर्थ यह था कि देश न्यूनतम आयात करे और अधिकतम निर्यात करे। इस सिद्धांत का संतुलित व्यापार रहते हैं औद्योगिक प्रतिबन्ध और व्यापार नियंत्रण देश में उद्योग व्यवसायों को राजकीय प्रोत्साहन देकर अत्यधिक वृद्धि करके से उत्पादन नहीं होगा। इसे औद्योगिक प्रतिबंध और व्यापारिक नियंत्रण करते हैं नवीन व्यापारिक मण्डियों एवं उपनिवेश देश से बाहर भेजी जाने वाली तैयार वस्तुओं की खपत के लिए विदेशों में व्यापारिक मंडियों को प्राप्त करना और वहाँ से देश के उद्योग-व्यवसायों के लिए कच्चा माल प्राप्त करना।

वाणिज्यवाद के उदय और विकास के कारण:

समुद्री यात्राएँ और भौगोलिक खोजें: कोलम्बस, वास्कोडिगामा, अमेरिगो, मेगलन, जान केबाट जैसे साहसी नाविकों ने समुद्री यात्राएँ करके अनेक नये देशों की खोज की। धीरे-धीरे नई बस्तियाँ बसायी गयी। यूरोप के पश्चिमी देशों ने विशेषकर स्पेन, पुर्तगाल, हालैण्ड, फ्रांस और इंग्लैण्ड ने नये खोजे हुए देशों में अपने-अपने उपनिवेश और व्यापारिक नगर स्थापित किए। चमड़ा, लोहा, रूई, ऊन आदि कच्चा माल प्राप्त कर अपने देश में नवीन वस्तुएँ निर्मित कर उपनिवेशों के रूप में निर्यात रूप में भेजी जाती थी। पुनर्जागरण का

प्रभाव यूरोप मे नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ मानवजीवन के प्रति अधिक अभिरुची और आकांक्षाएँ उत्पन्न की। पर्याप्त धन की मांग बढ़ी और बढ़ता हुआ धन वाणिज्य-व्यापार और उद्योग-धंधों से ही प्राप्त हो सकता था। मुद्रा प्रचलन और बैंकिंग प्रणाली विभिन्न कार्य लाभों उद्योग-धन्धों और वाणिज्य-व्यापार बढ़ जाने व व्यवसाय और व्यापार प्रणालियों में संशोधन, सुधार और परिवर्तन हुए। नवोदित राष्ट्र राज्यों द्वारा पोखास और संरक्षण यूरोप में पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में राष्ट्रीय राज्यों का उदय और विकास हुआ। फलतः उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ व्यापार और देश की आर्थिक समृद्धि राष्ट्रीय राज्य की शक्ति बन गयी। इन परिस्थितियों में वाणिज्यवाद और पूँजीवाद खूब फले-फूले।

वाणिज्यवाद का महत्व और परिणाम:

लगभग 250 वर्षों तक वाणिज्यवाद की विचारधारा का बाहुल्य यूरोप में रहा। वाणिज्यवाद की विचारधारा ने यूरोप के राष्ट्रों की आर्थिक नीति को ढाला। यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रारंभ वाणिज्यवाद से होता है। वाणिज्यवाद के कारण नवीन उद्योगों के माल को अत्यधिक निर्यात कर विदेशों से बड़े पैमाने पर सोना-चाँदी और धन प्राप्त किया गया। विदेशी माल की खरीद और आयात को निरुत्साहित किया गया। कच्चा माल प्राप्त करने और बने हुए माल की बिक्री और खपत के लिए नवीन उपनिवेशों की स्थापना की गई। वाणिज्यवाद की नीतियाँ और सिद्धांत अपनाने से यूरोप में इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी जैसे महान शक्तिशाली राज्यों का निर्माण हो सका।

वाणिज्यवाद के दोष:

वाणिज्यवाद ने उद्योग-धन्धों के प्रसार से पूँजीवाद को जन्म दिया। पूँजीवाद से यूरोपीय समाज में दो वर्गों का उदय हुआ- प्रथम पूँजीपतियों और उद्योगपतियों का वर्ग स्थापित कर लिया। संकीर्ण राष्ट्रीयता वाणिज्यवाद ने एक राष्ट्र को महत्व देकर उसकी समृद्धि के लिए दूसरे अन्य राष्ट्रों के शोषण का मार्ग प्रशस्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक और औपनिवेशिक स्पर्धा वाणिज्यवाद ने विभिन्न देशों में मधुर मैत्रीपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक और औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया। सोने-चाँदी के संचय की निरर्थकता वाणिज्यवाद ने सोना-चाँदी प्राप्त कर उसके संचयन पर अधिक महत्व दिया। उद्योग-धन्धों के विकास होने पर सोने-चाँदी का मूल्य की अपेक्षा लोहा, इस्पात, कोयला, खनिज तेल आदि अधिक मूल्यवान हो गया। कृषि की उपेक्षा वाणिज्यवाद के समर्थकों ने उद्योग-धन्धों और व्यवसायों के अधिकतम विकास पर बल दिया। इससे कृषि का क्षेत्र अविकसित और पिछड़ा रह गया। लोक कल्याण का अभाव वाणिज्यवाद ने राजनीतिक क्षेत्र में राज्य और शासक एवं आर्थिक क्षेत्र में पिछड़े वर्ग के हित में लोक कल्याण में अभिरुची नहीं थी। राज्यसत्ता और राज्यभक्ति में वृद्धि वाणिज्यवाद के समर्थकों, व्यापारियों और उद्योगपतियों ने शक्तिशाली राज्य का समर्थन किया। इन्हीं कारणों से वाणिज्यवाद का ह्रास हो गया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर